बुधसिंह

बूंदी नरेश महाराव राजा बुधसिंह का जन्म सं. 1742 में हुआ था। अपने पिता राव राजा अनिरुद्धसिंह की मृत्यु के पश्चात सं. 1752 में ये बूंदी की राजगद्दी पर आसीन हुए थे। बड़े वीर, रणपटु एवं अपने वंश गौरव के नाम पर मर मिटने वाले आत्माभिमानी पुरुष थे। औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके दो बेटों, बहादुरशाह और आजम, में दिल्ली के राजसिंहासन के लिए जो संग्राम हुआ उसमें बहादुरशाह की विजय इन्हीं के कारण हुई थी। कर्नल टॉड के शब्दों में "केवल

Scanned by CamScanner

बुधसिंह जी के पराक्रम ही से शाह आलम अपने प्रतिद्वन्द्वियों को जीत कर दिल्ली के सिंहासन पर बैठ सका। कोटे के रामसिंह जी और दतिया के दलपति बुंदेला तोप के गोले से उड़ गए और शाहजादा आजम अपने बेटे केदार बख्श समेत इस लड़ाई में बुधसिंह की तलवार खाकर सदा के लिए कबर में सो गया।" बुधसिंह का देहान्त सं. 1796 में अपने ससुराल वेगूं से तीन कोस की दूरी पर बाघपुर गाँव में हुआ था।

महाराव राजा बुधसिंह कला और सौन्दर्य के उपासक थे, साथ ही प्रतिभावान कवि भी थे। इन्होंने 'नेहतरंग' नाम का एक रीतिग्रंथ बनाया जो अपने रंग-ढंग का अप्रतिम है। यह सं.1784 में रचा गया था जैसा कि इसके अंतिम दोहे से सूचित होता है—

सतरहसै चौरासिया, नवमी तिथि ससिवार।
शुक्ल पक्ष भादौं प्रगट, रच्यौ ग्रंथ सुख सार॥

'नेहतरंग' चौदह तरंगों में विभक्त है। दोहा, कवित्त, सवैया, छप्पय आदि कुल मिलाकर 446 छंदों में यह समाप्त हुआ है। इसकी भाषा ब्रजभाषा है। कविता शृंगार रस से सराबोर है। अत्यन्त रस एवं सराहनीय रचना है। उदाहरण—

साजै सिंगार सषीन की संगति देखि हुँती वृषभानदुलारी।
लालन चित्त घनैं ललचैं भुज भैंटन कौं बढ़ि बांह पसारी॥
नैन की सैन निसंक झुकी उझकी कटु बैन उचारत गारी।
जानै कहा चतुराई कौं जो रस आखर गोरस बेचन हारी॥

Scanned by CamScanner

प्रतापसिंह

जयपुर नगर को बसानेवाले महाराजा सवाई जयसिंह की तीसरी पीढ़ी में महाराजा माधवसिंह हुए जिनके दो पुत्र थे, पृथ्वीसिंह और प्रतापसिंह। पृथ्वीसिंह का जन्म सं.1819 में और प्रतापसिंह का जन्म सं.1821 में हुआ था। माधवसिंह के बाद पृथ्वीसिंह जयपुर के अत्तराधिकारी हुए। परन्तु सं. 1833 में इनकी अकाल मृत्यु हो गई। इनके कोई सन्तान न थी, इसलिए प्रतापसिंह को राज्याधिकार प्राप्त हुआ।

Scanned by CamScanner

महाराजा प्रतापसिंह के समय में मरहठों का राजस्थान में बड़ा आतंक और जोर था। इसलिए उनका दमन करने के लिए महाराजा को कई युद्ध करने पड़े और दो-एक बार इनहोंने उन्हें पराजित भी किया। पर राजपूतों की अनेकता तथा अन्तःकलह के कारण राजस्थान का राजनैतिक वातावरण उस समय कुछ ऐसा बिगड़ा हुआ था कि इन्हें अपने प्रयत्न में स्थायी सफलता न मिली निरंतर युद्ध में लगे रहने के कारण इनकी धन-जन से ही हानि नहीं हुई, बल्कि इनके स्वास्थ्य को भी भारी धक्का पहुँचा और अंत में सं. 1860 में इनके जीवन का अंतिम अभिनय समाप्त हो गया।

ये बड़े मिलनसार, हँसमुख एवं गुणग्राही थे और काव्य, संगीत, चित्रकारी आदि कलाओं के संरक्षक थे। कवियों, विद्वानों और गायकों का इनके दरबार में बड़ा सम्मान होता था। इन्होंने आईने-अकबरी, दीवाने हाफिज आदि ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद करवाया और ज्योतिष, धर्मशास्त्र, वैद्यक, संगीत आदि विषयों पर भी बहुत से ग्रंथ लिखवाए, जो जयपुर के राज्य पुस्तकालय में सुरक्षित हैं। इनके सिवा इन्होंने कविता के संग्रह ग्रंथ भी बहुत से तैयार करवाए थे, जिनमें 'प्रताप वीर हजारा' और 'प्रतापसिंह हजारा' मुख्य है।

महाराजा स्वयं भी बहुत अच्छी कविता करते थे। इन्होंने बहुत से ग्रंथ बनाए जिनका काव्य-प्रेमियों में बड़ा आदर है। कविता में ये अपना नाम 'ब्रजनिधि' लिखते थे। इनके ग्रंथों के नाम नीचे दिये जाते है। ये सभी ग्रंथ नागरी प्रचारिणी सभा काशी द्वारा 'ब्रजनिधि-ग्रंथावली' के नाम से प्रकाशित हो चुके है। ग्रंथों के नाम ये हैं:—

(1) प्रीतिलता (2) स्नेह संग्राम (3) फाग रंग (4) प्रेम प्रकाश (5) विरह सलिता (6) स्नेह बहार (7) मुरली बिहार (8) रमक-जमक बत्तीसी (9) रास का रेखता (10) सुहाग रैन (11) रस-चौपड़ (12) नीति मंजरी (13) शृंगार मंजरी (14) वैराग्य मंजरी (15) प्रीति पच्चीसी (16) प्रेम पंथ (17) ब्रज शृंगार (18) श्री ब्रजनिधि मुक्तावली (19) दुख हरण वेलि (20) सोरठा ख्याल (21) ब्रजनिधि पद संग्रह (22) हरि पद संग्रह (23) रेखता संग्रह।

ब्रजनिधि की भाषा ब्रजभाषा है और कविता के विषय हैं—शृंगार, नीति और वैराग्य। इनकी कविता बहुत सरल, परिमार्जित एवं उल्लासपूर्ण है। वर्णन-शैली बहुत सहज और मार्मिक है। कृष्ण-लीला के विविध दृश्य जो इन्होंने अंकित किए हैं वे बहुत मर्यादा-पूर्ण तथा लोक-रंजनकारी हैं, और उनसे इनकी अखंड कृष्ण-भक्ति ही झलकती है। पर राधा के चित्रांकन से इनकी इन्द्रिय-लिप्सा व्यंजित होती है। ब्रजनिधि की राधा एक भक्त कवि की राधा नहीं, वरन किसी कामुक शृंगारी कवि की राधा प्रतीत होती है। इनकी दो कविताएँ यहाँ उद्धत करते हैं—

विधि वेद-भेद न बताव अखिल बिस्व,
पुरुष पुरान आप धार्‌यौ कैसौ स्वांग वर॥
कइलास वासी उमा करति खवासी दासी,
मुक्ति तजि कासी नाच्यौ राच्यौ कैसौ राग पर।
निज लोक छाँड़्यो ब्रजनिधि जान्यौ ब्रजनिधि,
रंग रस बोरी सी किसोरी अनुराग पर।

Scanned by CamScanner